दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273009

(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)

सम्बद्ध

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ & Fax : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक : 17.09.2018

प्रकाशनार्थ

महाविद्यालय के द्वारा स्वर्ण जयन्ती वर्ष के अन्तर्गत मनाये जा रहें दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यानमाला के तीसरे दिन महाविद्यालय के भूगोल विभाग द्वारा आयोजित **''जनसंख्या, पर्यावरण एवं प्राविधिकी''** विषय पर आज के मुख्य अतिथि **श्री भगवान देव, पूर्व अध्यक्ष, भूगोल विभाग,** दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर रहे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ सरस्वती के चित्र पर पुष्पांजलि के साथ शुरू हुआ। मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए श्री भगवान देव ने कहा कि पर्यावरण मनुष्य के लिए एक आवश्यक तथ्य है किन्तु मनुष्य ने अपने अनियंत्रित कार्यों के द्वारा पर्यावरण को प्रदूषित किया है। मनुष्य डी.डी.टी. जैसे कीटनाशकों का उपयोग करके एक प्रकार से साइलेन्ट किलर का आधार तैयार कर रहा है। जापान में मीनीमाता की बिमारी इसी प्रकार का साइलेन्ट किलर के रूप में कार्य किया। जॉन पी. होल्डरेन तथा पाउल आर. इरलिच की पुस्तक **''पापुलेशन बम''** में स्पष्ट किया कि विश्व की जनसंख्या गुणात्मक रूप में बढती है। जिससे संसाधनों के दोहन में कई गुना वृद्धि हो जाती है जिससे पर्यावरण प्रदुषण में कई गुना वृद्धि हो जाती है। 1972 में इटली में **''क्लब ऑफ रोम''** में उपभोग एवं उत्पादन क्षमता को ध्यान में रखते हुए एक पुस्तक **''द लिमिट ऑफ ग्रोथ''** प्रकाशित हुई। जिसमें यह माना गया कि पृथ्वी एक अंतरिक्षयान की तरह है जिसमें सीमित मात्रा में संसाधन है।'' अतः संसाधनों का उपयोग नियंत्रित तरह से करना होगा जिससे आने वाली हमारी पिढियाँ भी सुरक्षित रह सके। स्टाक होम सम्मेलन में भारत की पूर्व प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी ने जोर दे कर कहाँ था कि पर्यावरण ह्रास के लिए गरीबी एक महत्वपूर्ण कारक है। उपभोग का जो स्तर वर्तमान में है उसके अनुसार सम्पूर्ण जनसंख्या यदि अमेरिका के बराबर उपभोग करने लगे तब उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दो पृथ्वी की आवश्यकता होगी।

वास्तव में जनसंख्या जिस गति से बढ़ रही है उससे कई गुना तेजी से उपभोग स्तर बढ़ता जा रहा है। सोचनीय यह है कि विश्व के 20 प्रतिशत धनी लोगों द्वारा 80 प्रतिशत संसाधन का उपभोग किया जा रहा है जबकि 20 प्रतिशत गरीब जनसंख्या के द्वारा मात्र 1.6 प्रतिशत संसाधन में अपना जीवन यापन करते है।

उन्होंने कहाँ पर्यावरण को बचाने के लिए पर्यावरण जागरूकता, जनसंख्या नियंत्रण, उपभोग स्तर में बदलाव, पर्यावरण सम्मत प्राविधिकी तथा जीवन शैली में बदलाव की आवश्यकता है।

अंत में प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने अभार व्यक्त किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के वरिष्ठ शिक्षक डॉ. श्रीभगवान सिंह, डॉ. अर्चना सिंह, डॉ. कमलेश कुमार मौर्य, डॉ. अनूप राय, डॉ. अनुपमा मिश्र सहित अनेक प्राध्यापक तथा छात्र उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन विभागाध्यक्ष श्री अनिल भाष्कर ने किया।

डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह
प्राचार्य

युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति
व्याख्यान-माला
दिनांक - 15-21 सितम्बर, 2018

युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति
व्याख्यान-माला

युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति
व्याख्यान-माला